संदर्भ का हमेशा इंतज़ार रहता है। वेलणकर जी का लेख 'कहां बल और क्या ऊर्जा' अच्छा लगा, पर इसमें 'आप ज़रा इस सतह को देखिए' (पृष्ठ 15 पर) जैसे वाक्यों से उलझन पैदा होती है कि किस सतह को देखें जब कि साथ में कोई चित्र भी नहीं है। 'चांद का क्रेटर' और 'एटीपी एक सेतु भी पढ़े'। चांद के क्रेटर के बारे में जानकारी मज़ेदार लगी। शायद इस पर और चर्चा होती तो अच्छा रहता। सवालीराम से जो चुंबक वाला सवाल पूछा गया है वो काफी मज़ेदार है। रिंग मैग्नेट में दो ध्रुव तो होते हैं क्योंकि उसे बनाते समय ही इस प्रकार से चुंबकित किया जाता है कि एक सतह पर N ध्रुव और दूसरी पर S ध्रुव बन जाते हैं। पर जिस तरह से सवाल में छड़ चुंबक से बनाया गया गोल चुंबक है उस पर बात कुछ समझ नहीं आई। इसके जवाब का बेसब्री से इंतज़ार रहेगा।

पवन गुप्ता
इंदौर

जनवरी-फरवरी अंक पढ़कर लगा कि 'संदर्भ' में सिमटा ज्ञान आत्मसात करना अवर्णनीय अनुभव है।

ग्रेगर मेंडल की जीवनी पढ़ी। हमें यही प्रयोग कक्षा 8 में मटर के तने की लंबाई के आधार पर कराए गए थे। एक और प्रयोग फूलों के रंग से संबंधित था।

माधव केलकर द्वारा लिखित 'चांद के क्रेटर' बहुत अच्छा लगा। एस. बी. वेलणकर का लेख 'कहां बल और क्या ऊर्जा' भी काफी अच्छा लगा।

कुलविंदर सिंह
49, रानी बाज़ार, बीकानेर

अंक 21 मिला। इस अंक में कुछ सामग्री को छोड़कर लगभग सभी विज्ञान विषयों से जुड़ी हुई है।

इस अंक में विशेषकर कमलेश चंद्र जोशी का लेख 'बच्चे सीखते हैं, समझते हैं' तथा जॉन होल्ट का 'ये छोटे-छोटे पुस्तकालय' अच्छे लगे। वास्तव में आज लोगों में पढ़ने एवं लिखने की आदत खत्म होती जा रही है जिसे बढ़ाने के लिए पुस्तकालयों की आवश्यकता अनुभव की जा सकती है। मेरा एक सुझाव है कि यदि इस लेख को पूर्णतः अनुवादित न करते हुए क्षेत्रीय परिस्थितियों को देखते हुए तैयार करके आप प्रकाशित करते तो यह आलेख काफी महत्वपूर्ण होता।

शिवनारायण गौर
पो. रोहना, जिला होशंगाबाद

तीन वर्ष से मैं संदर्भ का नियमित सदस्य हूं। जब संदर्भ मिलने में देरी होती है तो मन उदास हो जाता है। मानों अपनी कोई प्यारी

चीज़ खो गई हो। यह मेरे लिए अति उपयोगी पुस्तिका है। मैं संदर्भ के लेख एवं 'सवालीराम का सवाल' अपनी स्कूल की छात्राओं मे भी कराता हूं। सवाल सुनकर ज़रूर सब सिर खुजलाने लगते हैं।

अंक 21 हाल ही में मिला है। क्या अंक इतनी देरी से प्रकाशित होता है? या फिर मुझे देरी से भेजते हैं। आप सोचिए कि अभी जुलाई माह चल रहा है और अभी हमें जनवरी-फरवरी का अंक मिला है!!

क्या सचमुच ही अंक इतनी देरी से निकलते हैं? क्या मुश्किल और परेशानी है कि आप इतनी देर से अंक प्रकाशन करते हैं? मैं आपके प्रकाशन मासिक 'स्रोत' का भी नियमित सदस्य हूं। वह तो समयानुसार प्रकट होता है, मिलता है; तो यह संदर्भ के प्रकाशन में ही इतनी देर क्यों लगती है?

क्या आपके लिए पाठक के अलावा किसी और का महत्व होता है? आपके लिए तो संदर्भ के पाठक के अलावा और कोई महत्वपूर्ण बात हो ही नहीं सकती। तो अगर देरी से प्रकाशित होता है तो इसे नियमित बनाएं। हम तो सोचते हैं कि ऐसी पत्रिका मासिक होनी चाहिए पर आप तो द्वैमासिक में भी नहीं पहुंच पाते।

संदर्भ हमारे लिए सामान्य ज्ञान, विज्ञान और शिक्षण – इन सब बातों का बड़ा ही महत्वपूर्ण द्वैमासिक है।

सागर पाठक
भावनगर, गुजरात

आपकी शिकायत जायज़ है। सिर्फ आपको ही नहीं सभी पाठकों को संदर्भ देरी से मिलता है। वजह है प्रकाशन में देरी। इस संबंध में हमने अपने पाठकों को एक खत भी लिखा था, कुछेक महीने पहले।

यकीन मानिए कि पाठक के अलावा हमारे लिए कोई और महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है। अगर पढ़ने वाले न हों तो किसी सामग्री को प्रकाशित करने का औचित्य ही क्या? और अगर हैं तो उनका ख्याल करना संपादकीय टीम का फर्ज़ है। पूरी कोशिश में है हमारी टीम कि इस साल के अंत तक आपको समय से अंक मिलने लगें। तब तक के लिए हमारा साथ दीजिए।

– संपादक मंडल

संदर्भ मुझे अतिप्रिय है किन्तु इसकी देरी खलती है। किसी-किसी लेख की भाषा कठिन प्रतीत होती है। अतः उन्हें दो या तीन बार पढ़ना पड़ता है। संदर्भ के लेखों द्वारा हमें अध्ययन में भी सहायता मिलती है और नई जानकारियां प्राप्त होती हैं।

नरेश रणसूरमा
गणेश चौक, हरदा

21वें अंक में गंगा गुप्ता का लेख 'मैं शिक्षिका क्यों बनी' मज़ेदार लगा। दूर-दराज़ के इलाकों में शिक्षा के प्रकाश को सतत बढ़ाए जाने का कार्य ही अपने आप में चुनौतीपूर्ण होता है। हाल ही में हिमाचल के डलहौज़ी से 22 कि. मी. दूर खाज़ियार कस्बे में मैं कुछ दिन रहा। इस दौरान मैं वहां के गांवों में भी गया। मैंने पाया कि वहां काफी गांव तो ऐसे हैं जहां प्रत्येक गांव में केवल तीन-चार परिवार ही रहते हैं। इन गांवों के बच्चों को पढ़ने के लिए खाज़ियार स्थित राजकीय विद्यालय आना पड़ता है। अभिप्राय यह है कि मुख्यधारा से कटे ऐसे गांवो के लोगों को शिक्षा कम-से-कम एक सूत्र में पिरोती है, एक जगह इकट्ठा करती है। ऐसे क्षेत्रों में चहां चिट्ठी पत्री भी देर-सवेर पहुंचती है अगर वहां शिक्षा भी न पहुंचे तो कितनी सीमित हो जाए उनकी दुनिया।

मुनीश रायज़ादा
फरीदाबाद, हरियाणा

20वां अंक पढ़ा। अंक जितना देरी से आया उतनी ही रोचकता भी लाया। अंक पढ़ने के बाद जो देरी की शिकायत करने की मैंने ठानी थी वह तमन्ना ढह गई क्योंकि संदर्भ की सामग्री को देखकर अहसास हुआ कि इसे जुटाने में समय तो लगा ही होगा। खैर!

मिलिंद वाटवे की 'बर्ड वॉचिंग' अच्छी लगी। इसी तरह अजय शर्मा ने अतिचालकता को काफी अच्छी तरह प्रस्तुत किया। 'परागकण का सफर' काफी रोचक लगा, इस लेख के साथ दिए गए चित्र काफी सजीव थे। लेकिन जब आगे बढ़ा तो विज्ञान गल्प पिछली बार की तरह नदारद थी। वैज्ञानिकों की जीवनियां और उनके शोधकार्यों के बारे में जानकारी ज़रूर दें।

चम्पालाल कुशवाहा
हिरन खेडा, होशंगाबाद

सदभ मुझे बराबर मिल रहा है। इससे परिवार और आसपास के बच्चे लाभांवित हैं। पत्रिका अपेक्षा से अधिक उच्चस्तरीय और संपादन की दृष्टि से समृद्ध है।

रामनारायण स्वामी
सादतपुर विस्तार, दिल्ली